पंजी क्र. - उ.सं. १६१९/३०-४-१९९७ ।। श्रीकृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ।।

विश्वगीताप्रतिष्ठानम्,

रामानुजकोट, रामघाट, उज्जयिनी, म.प्र., भारत

geetapratishthanam.in geetapratishthanam@gmail.com

Vishwa geeta pratishthanam

।। गीतास्वाध्यायः ।।

प्रारम्भिक भजन/स्वाध्यायगीत/प्रेरणागीत (3 मिनट)

घर-घर गीता का प्रचार हो, सदाचार और सद्विचार हो।
पहले सा मेरा भारत ये, जगद्गुरु फिर एक बार हो।।

वेदों का उद्घोष मधुर हो, उपनिषदों का पाठ प्रचुर हो,
गीता, रामायण, भारत की, वाणी ही चहुँ ओर मुखर हो,
कृष्णम् वन्दे जगद्गुरुम् का, आवर्तन फिर एक बार हो।।1।।

स्वाध्याय को हम अपनायें, दीन दुःखी को गले लगायें,
जन-मन का सब क्लेश मिटायें, घर-घर में समृद्धि लायें,
शान्ति-साधना के उपवन में, गीताजी का पाठ मधुर हो।।2।।

सौध-सौध और सदन-सदन में, नर-नारी के वदन-वदन में,
कुटी-कुटी के बाल-बालिका, मठ-मन्दिर, विद्यालय, वन में,
आज भोज, विक्रम के युग का, अनुवर्तन फिर एक बार हो।।3।।

कौन करेगा पूरा प्रण ये? कौन कहे घर-घर जन-जन से?
ज्ञान-ग्रन्थ गीता के गायक, पूर्ण करें हम ही इस प्रण को,
इक्कीसवीं सदी में अब ये, परिवर्तन फिर एक बार हो।।4।।

– आचार्य रमेश कुमार पाण्डेय

दीप प्रज्ज्वलन, ब्रह्मनाद (3 बार) ध्यान साधना (2 मिनट)

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

दीप, गणेश गौरी वन्दना एवं मानसिक पूजन (3 मिनट)

दीपज्योतिः परब्रह्म, दीपज्योतिः जनार्दनः।
दीपो हरति मे पापम्, दीपदेव नमोऽस्तु ते।।

पत्रम्, पुष्पम्, फलम्, तोयम्, यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहम् भक्त्युपहृतम्, अश्नामि प्रयतात्मनः।।

वक्रतुण्ड महाकाय, कोटिसूर्य-समप्रभ।
निर्विघ्नम् कुरु मे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा।।

सर्वमंगलमांगल्ये, शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि, नारायणि नमोऽस्तु ते।।

नारायणम् नमस्कृत्य नरम् चैव नरोत्तमम्।
देवीम् सरस्वतीम् व्यासम् ततो जयमुदीरयेत्।।

गीतामाता तुम्हारी जय जय जय। गंगामाता तुम्हारी जय जय जय।।-2
गौमाता तुम्हारी जय जय जय। भारतमाता तुम्हारी जय जय जय।।-2
गीतावाणी तुम्हारी जय जय जय। वीणापाणि तुम्हारी जय जय जय।।-2
वेदवाणी तुम्हारी जय जय जय। कल्याणी तुम्हारी जय जय जय।।-2

पुष्पांजलिः

ॐ यज्ञेन यज्ञ-मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकम् महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर् विजयो भूतिर्, ध्रुवा नीतिर् मतिर् मम।।
अनन्याश्चिन्तयन्तो माम्, ये जनाः पर्युपासते।
तेषाम् नित्याभियुक्तानाम्, योगक्षेमम् वहाम्यहम्।।
नानासुगन्धिपुष्पाणि, यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पांजलिर् मया दत्ता, गृहाण परमेश्वर।। मन्त्रपुष्पांजलिम् समर्पयामि।

गीता गायक श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् की जय। राजा श्रीरामचन्द्र भगवान् की जय।
गीतामाता की जय। गौमाता की जय। गंगामाता की जय। गायत्रीमाता की जय।
संस्कृतमाता की जय। भारतमाता की जय।
ॐ नमः पार्वतीपतये हर हर महादेव। जय जय श्रीराधे (3 बार)

सभी को बैठाकर आरती दें। आज के यजमान अगले सप्ताह के यजमान को कुमकुम अक्षत से तिलक द्वारा सम्मान कर उनके मस्तक पर श्रीगीताजी रखें, तत्पश्चात् प्रसाद का वितरण करें। वित्तप्रमुख आरती की राशि की गणना कर रजिस्टर में लिखें और प्राप्ति रसीद बना दें। इसके बाद एक भजन या प्रेरणागीत गा सकते हैं। अन्त में सामूहिक कल्याण मन्त्र बोलें।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।
ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः।।

*** सम्पर्क सूत्र ***

डॉ. जवाहर लाल द्विवेदी	– 9425724206	डॉ. विष्णु नारायण तिवारी	– 9425754257
श्री विष्णु प्रसाद शर्मा	– 9425676041	श्री मोहन नागर	– 9425442474
श्री ओमप्रकाश शर्मा	– 9425790288	डॉ. जे. एल. त्रिपाठी	– 9893986442
श्री हरिनारायण शर्मा	– 9424406532	श्री महेशप्रसाद पाण्डेय	– 9425690727
श्री प्रहलाद गुप्ता	– 8982140232	श्री नेमीचन्द व्योम	– 9406725365
श्री सुधीर सक्सेना	– 9981362592	पं. रमेश कोठारी	– 9993938735
श्री साकेतसुमन रघुवंशी	– 9893997120	श्री श्रवण कुमार उपाध्याय	– 9479805106

* स्थानीय सम्पर्क :

सौजन्य : एकता हायर सैकेण्ड्री स्कूल
कमला गंज, शिवपुरी (म.प्र.)
मोबाईल नं. : 9425430380

गायत्री मन्त्र का मानसिक जप 3 बार (1 मिनट)

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।
।। ॐ शान्तिः, ॐ शान्तिः, ॐ शान्तिः ।।

सरस्वती, ईश वन्दना (5 मिनट)

ईशावास्यमिदम् सर्वम्, यत् किंच जगत्याम् जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथाः, मा गृधः कस्य स्विद्-धनम्।।

शुक्लाम् ब्रह्म-विचार-सार-परमाम्, आद्याम् जगद्-व्यापिनीम्,
वीणा-पुस्तक-धारिणीम् अभयदाम्, जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिक-मालिकाम् विदधतीम्, पद्मासने संस्थिताम्,
वन्दे ताम् परमेश्वरीम् भगवतीम्, बुद्धिप्रदाम् शारदाम्।।

ध्यानम् शरणम् गच्छामि, योगम् शरणम् गच्छामि।
ज्ञानम् शरणम् गच्छामि, सत्यम् शरणम् गच्छामि।।

नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय, जय बोलो हनुमान हरि-2

रामम् शरणम् गच्छामि, कृष्णम् शरणम् गच्छामि।
धर्मम् शरणम् गच्छामि, सत्यम् शरणम् गच्छामि।।

शान्ताकारं भुजगशयनं, पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णम् शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं, योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भयभयहरं, सर्वलोकैकनाथम्।।
वसुदेवसुतं देवं, कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दम्, कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।। श्री कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम देव-देव।।

गुरुवन्दना - (3 मिनट)

अखण्डमण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

वन्दउँ गुरुपद पदम परागा। सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।।
अमिय मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव-रुज परिवारू।।
सुकृति शम्भु तन विमल विभूती। मंजुल मंगल मोद प्रसूती।।
जन मन मंजु मुकुर मलहरनी। किए तिलक गुन गन बस करनी।।
श्रीगुरु पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती।।
सीयराममय सब जग जानी। करहुँ प्रनाम जोरि जुगपानी।।
सीताराम चरन रति मोरे। अनुदिन बढ़उँ अनुग्रह तोरे।।
मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवहु सुदशरथ अजिर बिहारी।।

आज का सुभाषित/सूक्ति - (2 मिनट), ब्रह्मनाद, स्वाध्याय महिमा

मज्जन फल पेखिय ततकाला। काक होहिं पिक बकउ मराला।।
सुनि आचरज करै जनि कोई। सत्संगति महिमा नहिं गोई।।
सो जानब सत्संग प्रभाऊ। लोकहुँ वेद न आन उपाऊ।।
बिनु सत्संग विवेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।।
सतसंगत मुद मंगल मूला। सोइ फल सिधि सब साधन फूला।।
सठ सुधरहिं सत्संगति पाई। पारस परस कुधात सुहाई।।

आज का अमृतवचन (1 मिनट), ब्रह्मनाद, गीता+माहात्म्यम् (2 मिनट)

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे, समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव, किम् अकुर्वत संजय।।

यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम् अर्धमस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

परित्राणाय साधूनाम्, विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय, सम्भवामि युगे युगे।।

गीता सुगीता कर्त्तव्या, किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य, मुखपद्माद् विनिःसृता।।

आज का चिन्तन/प्रेरक प्रसंग (3 मिनट) ब्रह्मनाद

श्रद्धा व समयानुसार श्रीमद्भगवद्गीता के क्रमशः न्यूनतम 11 श्लोकों का शुद्ध वाचन या अनुवाचन करें, तत्पश्चात् एक-एक स्वाध्यायी क्रमशः एक-एक श्लोक की हिन्दी टीका पढ़ें। श्लोकों के अर्थ पर चिन्तन-मनन अवश्य हो।

नमामि नमामि नमामि वरम्, श्रीकृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।-2
नमामि नमामि नमामि गुरुम्, श्रीकृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।-2
श्रीकृष्णाय वासुदेवाय, हरये परमात्मने। प्रणतः क्लेशनाशाय, गोविन्दाय नमो नमः।।

श्रीगीताजी की आरती (6 मिनट)

जय भगवद्गीते, मैया जय भगवद्गीते।
हरि हिय कमल विहारिणि, सुन्दर सुपुनीते।।1।।
कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि, कामासक्तिहरा।
तत्त्वज्ञान-विकासिनि, विद्या ब्रह्म परा।।2।।

निश्चल-भक्ति-विधायिनि, निर्मल मलहारी।
शरण-रहस्य-प्रदायिनि, सब विधि सुखकारी।।3।।

राग-द्वेष-विदारिणि, कारिणि मोद सदा।
भव-भय-हारिणि, तारिणि, परमानन्दप्रदा।।4।।

आसुर-भाव-विनाशिनि, नाशिनि तम-रजनी।
दैवी सद्गुण-दायिनि, हरि-रसिका सजनी।।5।।

समता, त्याग सिखावनि, हरि-मुख की बानी।
सकल शास्त्र की स्वामिनि, श्रुतियों की रानी।।6।।

दया-सुधा बरसावनि, मातु! कृपा कीजै।
हरिपद-प्रेम दान कर, अपनो कर लीजै।।7।।